DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo-9415376545

B.A PART-I (HONS.) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No..... Lecture No-22 Date. 9-05-2020

गाँधी के शिक्षा-सम्बन्धी विचार

गाँधी ने जिस सामाजिक पुनरोत्थान की संकल्पना की थी, उसका उदय शून्य काल में नहीं हो सकता। बुनियादी बातें जान लेने मात्र से सर्वोदय की कल्पना साकार नहीं हो सकती। जिन सामाजिक, आर्थिक, एवं राजनीतिक सिद्धान्तों की प्रतिष्ठा हम करना चाहते हैं, वह एक आदर्श राज्य में ही संभव है। क्योंकि उनकी जड़ें नैतिकता के सिद्धान्त पर टिकी हैं। जब तक भारतवर्ष में नैतिकता सहज जीवन-पद्धति न बन जाय, तब तक हमारे सारे आदर्श हमारी जीवन-पद्धति का ही प्रतिरूप बनें और हम उन्हें सहज रूप से अपनी आन्तरिक प्रेरणा की माध्यम से स्वीकार कर लें तो हमको अपनी शिक्षा-पद्धति की ओर ध्यान देना होगा। किसी देश के नागरिकों का व्यवहार उनकी आकांक्षाओं और आस्थाओं के अनुरूप होता है इसलिए हमें शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी।

शिक्षा क्या है? गाँधी के अनुसार शिक्षा आत्म-साक्षात्कार या अपने को पहचानने की कला है। अगर शिक्षा दोषपूर्ण होगी तो सिर्फ आर्थिक स्वार्थों को साधने वाली होगी तो देश में आदर्श व्यवस्था की स्थापना नहीं हो सकती। गाँधी जी के शिक्षा-दर्शन की यही मूल धारणा है।

गाँधी जी ने शिक्षा-सम्बन्धी समस्याओं की समालोचना उस समय की जब भारत में एक विदेशी शिक्षा का बोलबाला था। जो जबरदस्ती भारत पर थोप दी गयी थी। अंग्रेजों को केवल ऐसे शिक्षित लोगों की आवश्यकता थी- जो उनको भारत में शासन करने में सहायता प्रदान करें।

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545

B.A PART-I (HONS) Paper-II
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date 9-05-2020

वे नहीं चाहते थे कि भारत के लोग सही अर्थ में शिक्षित हो जायँ और उन्हीं के खिलाफ आवाज उठाने लगें। इसलिए उन्होंने अपनी शिक्षा पद्धति को ज्ञान परक नहीं अपितु विदेशी भाषा परक बना दिया। वे मानते थे कि भारत के विद्यार्थियों का अधिक समय विदेशी भाषा ग्रहण करने में ही खर्च हो जाएगा और फिर भी वह इतना ही सीख पाएगा जितने से उनके द्वारा संचालित कार्यालयों का दैनिक कार्य हो जाय। और शिक्षा का वास्तविक महत्व ताख पर रखा रह जाय। इस प्रकार अंग्रेजों ने काले अंग्रेजों की उत्पत्ति की जो आज भी देश के लिए समस्या बनाए हुए हैं। अब धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है किन्तु अभी भी जान-अनजाने नौकरी पाने की योग्यता अंग्रेजी बोल पाने की योग्यता से मापी जाती है। गाँधी इस व्यवस्था से अत्यन्त विक्षुब्ध थे। इसलिए उन्होंने एक सम्मेलन का आह्वान किया और एक नई शिक्षा पद्धति की सिफारिश की। इस पद्धति को "वर्धा स्कीम ऑफ एजुकेशन" का नाम दिया गया। इस स्कीम का मुख्य आधार था "बुनियादी शिक्षा" (Basic Education).

बुनियादी शिक्षा के दो मुख्य उद्देश्य थे- प्रथम तो यह कि शिक्षा को सही अर्थ में शिक्षित होने का माध्यम बनाया जाय और दूसरा यह कि शिक्षा को आत्मनिर्भरता के सिद्धान्त से जोड़ा जाय।

गाँधी ने अपनी शिक्षा-नीति के माध्यम से जो कहा है वह सत्य है किन्तु अधिक सारगर्भित अध्ययन किए जाने से प्रतीत होता है कि उनके विचारों का सैद्धान्तिक पक्ष ढूँढा जा सकता है। जैसा कि अपनी पुस्तक "Education Philosophy of Mahatma Gandhi" में एम० एस० पटेल ने लिखा है कि "गाँधीजी के शिक्षा दर्शन का आधार प्रकृतिवादी है। उद्देश्य

PTO

Scanned with CamScanner

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376515
B.A PART-I (HONS) Paper-II

Ref. No.................. Date. 9-05-2020

आदर्शवादी तथा किंचित प्रयोजनवादी है।" यह इस अर्थ में प्रकृतिवादी है कि रूसो की तरह गाँधी ने विद्यार्थी को प्रकृति के माध्यम से सीखने की राय दी है। यह आदर्शवादी इस अर्थ में है कि यह गाँधी के सत्य, अहिंसा तथा सर्वोदय के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करती है। और प्रयोजनवादी इस अर्थ में है कि गाँधी शिक्षा को आत्मनिर्भरता का साधन मानते हैं।

गाँधी की बुनियादी शिक्षा की प्रमुख बातें इस प्रकार हैं—

* 7-14 वर्ष तक की उम्र तक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए और निःशुल्क भी।
* शिक्षा मातृ भाषा द्वारा हो। विदेशी भाषा के माध्यम से नहीं।
* शिक्षा में हस्तकला को महत्व दिया जाना चाहिए।
* शिक्षा का बुनियादी उद्देश्य अच्छा नागरिक पैदा करना। अच्छे नागरिकों से ही अच्छा देश ही बनता है और इसमें अच्छी शिक्षा की प्रमुख भूमिका है।
* शिक्षा जीवन के यथार्थ से जुड़ी हो और गाँधी के स्वावलम्बन के सिद्धान्त के अनुरूप हो।
* शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार सबको समान रूप से है। स्त्रियों को भी शिक्षा की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि पुरुषों को।
* जब गाँधी जी ने उच्च शिक्षा की बात की तब भी उनके बुनियादी सिद्धान्त वही रहे। इतना उन्होंने और जोड़ दिया कि उच्च शिक्षा का उद्देश्य देश की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि गाँधी के इस शिक्षा सम्बन्धी विशद व्याख्या से समकालीन शिक्षा शास्त्री पूर्ण रूप से सहमत न हों किन्तु जो भी बातें गाँधी जी ने सुझायी हैं, उनका महत्व भारत के सन्दर्भ में आज भी आँका जाना चाहिए। वे कोरे सिद्धान्तों की बात नहीं करते। करोड़ों भारतीयों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा मानसिक पहलुओं को ध्यान में रखकर उनका महत्व समझा जाना चाहिए।

—*समाप्त*—

Scanned with CamScanner